Global Journal of Emerging Trend in Education and Social Science
Vol. 4, Issue 2 – 2021
ISSN: 2582-1377

‘एक पुरुष प्रेरणा बिन्दु से निर्वेद तट तक’ उपन्यास में बिंबित नारी-चेतना

डॉ. संध्या पुजारी[1]

[1]विभागाध्यक्ष शिक्षा विभाग, सांदीपनी एकेडमी, अछोटी जिला- दुर्ग (छ.ग.)

भारतीय नारी को गृहलक्ष्मी कहा जाता है, यदि नारी सुविकसित, सुशिक्षित, सुसंस्कृत हो तो वह अपने परिवार, संतान, समाज, यहाँ तक कि अपने राष्ट्र के लिए भी वरदान है। भारतीय चिंतन में नारी को अर्धांगिनी कहा गया है। यदि हम अपने राष्ट्र व समाज को उन्नति चाहते हैं तो उसके लिए यह आवश्यक है कि समाज के आधे अंग ‘‘नारी‘‘ की उन्नति के ही प्रयास किए जाएँ। शत-प्रतिशत न सही पर यह प्रयास किया जाना तो अति आवश्यक है।

हमारा भारत महान परंपराओं वाला देष है, यहाँ सृष्टि-सृजन से ही नारी को पवित्र माना गया है। “यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता‘‘ अर्थात् जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहाँ देवता निवास करते हैं। जयशंकर प्रसाद जी ने भी अपनी रचना में कहा है

‘‘नारी ! तुम केवल श्रद्धा हो, विश्वास रजत नग पदतल में,
पियूष सोत सी बहा करो, जीवन के सुन्दर समतल में।“

परंपरा से उपन्यासकारों ने नारी को इस रूप में व्यक्त किया है... नारी पर अत्याचार एक समाजिक परंपरा बन गई है।

नारी-पुरुष का संबंध आदिकाल से चला आ रहा है। पूर्व में भारतीय नारी को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था, वहीं पश्चात्काल में उसका क्षरण का क्रम अनवरत रूप से चला आ रहा है। पुरुष के अहंकार, घृणा व स्वार्थ ने नारी को मात्र भोग की वस्तु बना दिया, उसे सबला से अबला बना दिया गया है, रहा-सहा कसर विदेशी आक्रमणों ने पूरा कर दिया, भारत इन्हीं विदेशियों के आधीन हो गया। सनातन काल में भारतीय नारियों का सर्वाधिक पतन हुआ। वे सामाजिक व मानसिक रूप से पद-दलित की गई, उन्हें भोग्या बना दिया गया। पश्चातकाल में सामंतवादी प्रथा में नारी मात्र भोग की वस्तु बन गई। नारी-शोषण का भयावह दृश्य स्वतंत्रता के कुछ पश्चातकाल तक रहा। आधुनिक युग में नारी-चेतना को जागरण का काल माना गया

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

है। आज की शिक्षित नारी गृहस्थी और कार्यालय दानों की जिम्मेदारियों को पूरी तरह से निभा रही है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पुरुष के केवल बराबरी ही नहीं उससे आगे भी निकल गई है। सदियों से होते आए शोंषण और दमन के प्रति नारी चेतना ही नारी-चेतना को जन्म दिया है।

छत्तीसगढ़ की महान उपन्यासकार डॉ सत्यभामा आडिल के उपन्यास एक पुरुष प्रेरणा विन्दु से निर्वेद तट तक में बिवित नारी-चेतना, जिरो प्रशंससनीय एवं सबल नारी-उत्थान का उच्च सोपान कहा जा सकता है, जहाँ छोटे-से-छोटे को उद्धृत किया गया है। उपन्यास में पाप-पुण्य, घृणा, शोषण एवं भोग को विश्लेषित किया गया है। लघु उपन्यास होते हुए भी ‘‘गागर में सागर‘‘ भर दिया गया है। उनके उपन्यास के पात्र एवं उनका चरित्र-चित्रण, गुण-अवगुण, समाज में व्याप्त अच्छाई एवं बुराई को अभिव्यक्त करने में सक्षम हैं।

उपन्यास में वर्णित कतिपय चमत्कारिक परिदृश्य जो हृदय को स्पंदित कर देता है। नारी के मर्म को स्पर्श करते हुए, पुरुष की विकृत मानसिकता की पोल खोल देता है। प्रस्तुत उपन्यास दो मित्रों की, नारी के प्रति अपनी-अपनी विपरीत सोच व प्रतिक्रिया पर आधारित है। मित्रों में अखंड मित्रता है, किंतु विचारों में घोर अंतर है। एक नारी को ममतामयी, श्रद्धामयी मानता है, वहीं दूसरा नारी का मात्र भोग की वस्तु समझता है, साथ ही धन को ही सर्वस्व का स्वामी समझता है।

‘‘मुझे नारी से अत्यधिक घृणा है, मैं उस कुचलने जाता हूँ, रौंदते जाता हूँ। जव भी किसी नारी को देखता हूँ, उसे रौंदने की, नोचने की तीव्र इच्छा जाग पड़ती है। इसलिए मैं प्रास के यहाँ चला जाता हूँ। वह भी समाज का एक अंग है, क्योंकि अभी संस्कारों की बेड़ियाँ इससे बँधी हैं। इन बेड़ियों से साज अभी मुक्त नहीं हुआ है और न कभी होगा। तुम देखो आदिकाल से लेकर अब तक का इतिहास, हर युग में यह अंग रहा है। कभी सामाजिक मान्यता मिली, कभी असामाजिक, अनैतिक करार दिया गया, पर चाहे खुले रूप में हो या छुपे ढंग से, यह अंग बना ही है, क्योंकि यह भी एक प्रकार का शोषण ही है।‘‘ मनुष्य कि अहम चेतना के कारण शोषण कभी खत्म नहीं होगा।

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

प्राचीन काल से ही नारी-उत्पीड़न और अनतिक भोग की कुत्सित परंपरा रही है। नारी का सौदर्य का आकर्षण उसकी इच्छा के विरुद्ध परिणाम देता है। मानव उसके सौदा को प्राप्त करन के लिए अनेक प्रकार का षड़यंत्र मार्ग भी अपना लेता है।

उगा, उपन्यारा के नायक चुन्नी की विवाहिता पत्नी है, जो पति के प्रति स्नेह रखती है, एक भारतीय नारी की तरह उत्तम चित्रण पस्तुत करती है जिसके जीवन में सरसता, राहानुभूति, प्रेग, शांति आदि गुण भरे हुए है, से रहित निष्कलंक जीवन जीना चाहती है। जीवन की क्षणभंगुरता को समझते हुए उमा ने अपना अंतिम मत इस प्रकार व्यक्त किया है, जीवन धूप-छाँह है जिससे गुजरना पड़ता है। मैं सब समझती हूँ इसलिए कुछ नहीं कहूँगी। कोई विद्रोह नहीं, कोई शिकायत नहीं। कर्त्व्य करने पर अधिकार स्वयं मिल जाता है, अतः अधिकार की कल्पना व्यर्थ है। यहाँ भारतीय नारी की आदर्श भूमिका को चित्रित किया गया है, जो जीवन को क्षणभंगुर समझती है।

हमारा भारत भूमि मात्र नहीं वरन् मातृभूमि है, जिसे पुण्य-भूमि भी कहा जाता है। यहाँ पूर्व से ही नारी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है व नारी-चेतना के उत्कृष्ट उदाहरण से हमारा इतिहास गौरवान्वित होता आ रहा है। मध्ययुग की विकृति को पूर्णरूपेण समाप्त कर वर्तमान के नारी-चेतना के प्रयास को अधिकाधिक प्रोत्साहन देना होगा, जिससे नारी-शक्ति का जागरण हो सके, साथ ही सशक्त भारत में वीरता, ज्ञान-विज्ञान, संस्कृति की धारा प्रवाहित होगी। डॉ. सत्यभामा आडिल ने नारी-चेतना के लिए अनेक बिन्दुओं को स्पर्श करते हुए उनके निराकरण एवं जागरण का सशक्त आह्वान किया है।

नारी की महानता को लेकर अनेक प्रसंग हमारे धर्मशास्त्रों में देखने को मिलते हैं। नागकन्या सती सुलोचना ने राक्षस कुल में बहुरानी के रूप में लंका नरेश के धर्म का उदाहरण प्रस्तुत किया। नारी राक्षस राजा हिरण्यकश्यप की पत्नी रहते हुए भी भक्त प्रहलाद को जन्म दिया।

‘‘मनुष्य तो मात्र परमात्मा की आकृति है, किंतु नारी उस आकृति के भीतर भरी हुई प्रकृति है। अंगार तक तक अंगार है, जब तक उसमें उसकी दाहिका शक्ति है और रंग दमकता हुआ लाल है। दाहिका शक्ति के बुझ जाने से अंगार, अंगार ही कहाँ रह गया? वह तो कोयला हो गया। इसी प्रकार नर के साथ यदि नारी है, तो वह नर ही शिव तक संभव है और नारी के योगदान से रहित सर्व साधारण श्रेणी का नर केवल शवतुल्य ही संभव है।‘‘

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

नारी-चेतना के उदाहरणों से हमारे भारतीय शास्त्र भरे पड़े हैं। वाल्मीकि रामायण में इसका उत्कृष्ट उल्लेख मिलता है-

"कार्येषु मंत्रि, वचनेषु दासी,
भोज्येषु माता शयनेशु रंभा।
धर्मानुकूला, क्षमया धारिनी,
भार्याच षड्गुण्यवतीह, दुर्लभा।"

राजा दशरथ की महारानी कौशल्या एक विदुषी नारी थीं। कौशल्या मंत्री के समस्त राज-कार्य में सलाह देती थीं। दशरथ के वचनों पर अथवा आज्ञा पर वे आज्ञाधारिणी दासी की तरह भी सेवा करती थीं। भोजन के समय पत्नी कौशल्या राजा दशरथ को माता के समान लगती थीं। शयनकाल में रंभा सी लगती थीं। दशरथ का सुख-दुःख ही कौशल्या का सुख-दुःख होता था।

राजा दशरथ की अन्य रानी कैकेई तो युद्ध-विशारद थीं। उन्होंने देवासुर संग्राम में घायल दशरथ के प्राण भी बचाए थे साथ ही युद्ध का संचालन भी किया था। ज्ञान, ध्यान एवं वीरता में उक्त काल में पारंगत होती थीं।

वेदों में नारी एवं पुरुषों का अधिकार समानता का था। समस्त वैदिक साहित्य इस प्रकार के उदाहरणों से परिपूरित है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार- अर्थोहावा एव आत्मनो यत जाया अर्थात् स्त्री अपना आधा भाग है। अयज्ञीयः वा एव य अपयत्नीकश् अर्थात् जो विवाह नहीं करता वह यज्ञ-कर्म के लिए अयोग्य है।

नारी के संबंध में ऋग्वेद ने कहा है- ष्जायेदस्तष् अर्थात् पत्नी ही गृह है। मनुस्मृति में मनु ने कहा है- "न गृहं गृह मित्याहुः गृहिणी गृहमुच्यते"[9] अर्थात् वास्तविक घर तो पत्नी है बिना पत्नी के पति का कोई अस्तित्व ही नहीं है। एक-दूसरे के पूरक हैं। यही सृष्टि की रचना का आधार है।

मानस में कहा भी गया है कि नारी के बिना पुरुष का कोई अस्तित्व नहीं है, जैसे बिना पानी के नदी का एवं बिना प्राण के शरीर का कोई प्रयोजन नहीं होता है। महादेवी वर्मा ने कहा भी है-पुरुष के द्वारा स्त्री का चित्रण अधिक निकट पहुँच सकता है, किंतु यथार्थ के समीप नहीं।

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

"पुरुष के लिए नारीत्व का अनुमान है, नारी के लिए अनुभव, अतः अपनेजीवन का जैसा चित्रण वह हमें दे सकेगी, वैसा पुरुष बहुत साधना के बाद भी शायद दे सके"[10]

आज के आधुनिक युग में स्त्रियों को शक्ति का प्रतीक माना माना जाता है। आज भारतीय नारी चारदीवारी से निकल कर अपने अधिकारों के प्रति सजग हो गई है। शिक्षित होकर विभिन्न क्षेत्रों में वो अच्छा प्रदर्शन कर रही है।

रामभक्त शबरी भगवान की प्रतिक्षा में समय काटते हुए अंततः राम से उसका साक्षात होता है। शबरी का आत्मबल था जो भगवान के आगमन से पूर्ण हुआ। गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीराम के व्यापक रूप की कल्पना करते हुए रामचरितमानस में लिखा है

"सिय राममय सब जग जानी।
करऊँ प्रणाम जोरि जग पानी ।।"

शबरी ने राम और सीता का उल्लेख करते हुए उन्हें विश्वव्यापी स्वरूप दिया।

वर्तमान में विद्वानों ने नारी-समस्याओं पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं, जिसे सराहनीय कहा जा सकता है। डॉ. आडिल ने अपने उपन्यास प्रेरणा बिन्दु से निर्वेद तट तक में नारी-चेतना से संबंधित अनेक समस्याओं को उजागर करते हुए समाज का ध्यानाकर्षित करने का प्रयास किया है, जो प्रशंसनीय एवं विचारणीय है।

संदर्भ सूची

1. चटर्जी, रत्ना (2012): हिन्दी उपन्यासों में नारी-अस्मिता. नई दिल्ली: बी.के. तनेजा क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, 28 शॉपिंग सेंटर कर्मपुरा, प्रथम संस्करण।
2. चटर्जी, रत्ना (2012): हिन्दी उपन्यासों में नारी-अस्मिता. नई दिल्ली: बी.के. तनेजा क्लासिकल पब्लिशिंग कंपनी, 28 शॉपिंग सेंटर कर्मपुरा, प्रथम संस्करण।
3. आडिल, सत्यभामा (2000): एक पुरुष प्रेरणा बिन्दु से निर्वेद तट तक. रायपुर: विकल्प प्रकाशन, द्वितीय आवृत्ति।
4. आडिल, सत्यभामा (2000): एक पुरुष प्रेरणा बिन्दु से निर्वेद तट तक. रायपुर: विकल्प प्रकाशन, द्वितीय आवृत्ति।

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.

5. दास, स्व. विष्णुशरण (1993): ज्ञान गंगा. मानव मंगल साधना संस्थान (बसना), जिला-रायपुर (मध्यप्रदेश) शाखा इन्दौर।
6. दास, स्व. विष्णुशरण (1993): ज्ञान गंगा. मानव मंगल साधना संस्थान (बसना), जिला-रायपुर (मध्यप्रदेश) शाखा इन्दौर।
7. हरदास महामहोपाध्याय, बालशास्त्री (1991): वैदिक राष्ट्र-दर्शन खण्ड-2. नई दिल्ली:सुरुचि प्रकाशन, केशव कुंज, झण्डेवाला, 110055.
8. हरदास महामहोपाध्याय, बालशास्त्री (1991): वैदिक राष्ट्र-दर्शन खण्ड-2. नई दिल्लीः सुरुचि प्रकाशन, केशव कुंज, झण्डेवाला, 110055.
9. हरदास महामहोपाध्याय, बालशास्त्री (1991): वैदिक राष्ट्र-दर्शन खण्ड-2. नई दिल्लीः सुरुचि प्रकाशन, केशव कुंज, झण्डेवाला, 110055.
10. वर्मा, महादेवी (1955): शृंखला की कड़ियाँ. नई दिल्ली: राधाकृष्ण प्रकाशन।
11. शर्मा, श्रीराम (2013): रामायण में परिवारिक आदर्श. मथुरा: युग निर्माण ट्रस्ट।

© Eureka Journals 2021. All Rights Reserved.